चतुर्थ अध्याय

महात्मा ज्योतिराव फुले के दार्शनिक विचार

4.1 प्रस्तावना–

प्रत्येक व्यक्ति का व्यक्तित्व उसके विचारों से प्रभावित होता है। विचार मानव की प्रेरणा शक्ति होते हैं, हृदय में पहले विचार उठता है उसके पश्चात् योजना बनती है तदन्तर उसका क्रियान्वन होता है। हमारे कार्यो का संचालन विचारों के द्वारा होता है। विचार उन्मुक्त वातावरण में विचरण करते हुये सिद्धान्त रूप में परिणित होकर समाज को प्रत्यक्ष व परोक्ष रूप से प्रभावित करते हैं। प्रत्येक व्यक्ति का अपना जीवन दर्शन होता है, व्यक्ति के विचार व कार्य उसी दर्शन पर आधारित होते हैं। यही दर्शन सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक, धार्मिक आदि समस्याओं के समाधान में सहायक होता है। महात्मा ज्योतिराव फुले ने अपने नवीन दृष्टिकोण के आधार पर अपनी विचार श्रंखला समाज को समर्पित की है जिससे प्रेरित होकर समाज ने एक नई दिशा प्राप्त की है। उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व से ज्ञात होता है कि उन्होने विभिन्न समस्याओं से ग्रस्त समाज के विरूद्ध संघर्ष किया तथा उसके परिणामस्वरूप जो विचारधारा प्रस्फुटित हुयी, वह उनके जीवन दर्शन का रूप लेकर समाज के सम्मुख एक आदर्श रूप में उपस्थित हुयी। उनका सम्पूर्ण दर्शन मानवतावादी है।

प्रस्तुत अध्याय में शोधकर्ता द्वारा महात्मा ज्योतिराव फुले के जीवन दर्शन के मूल स्त्रोतो एवं उनके दार्शनिक, सामाजिक, राजनैतिक विचारों का अध्ययन किया गया है।

4.2 दर्शन का सम्प्रत्यय–

दर्शन शब्द संस्कृत भाषा की 'दृश्' धातु से बना है, ''दृश्यते् यथार्थतत्वमनेन इति दर्शनम्'' अर्थात् जिसके द्वारा यथार्थ तत्व की अनुभूति हो वही दर्शन है। दर्शन मात्र

चिंतन का विषय न होकर 'अनुभूति' का विषय माना जाता है। दर्शन न केवल बौद्धिक तृप्ति का आभास कराता है वरन् समग्र व्यक्तित्व बदलने में सक्षम है (ओड, 2011)। बौद्धिकता और तर्क की कसौटी पर मूलभूत मान्यताओं का निष्पक्ष परीक्षण करना दर्शन कहलाता है। दर्शन मनुष्य की वह विशुद्ध बौद्धिक प्रक्रिया है जिसमें निष्पक्ष चिंतन, तर्क एवं विश्लेषण का प्रमुख स्थान होता है।

प्रत्येक व्यक्ति के जीवन का कोई न कोई दर्शन अवश्य होता है, चाहे व्यक्ति उसके संबंध में सचेतन हो या न हो जैसा कि एल.के.ओड ने अपनी पुस्तक में उद्धृत किया है कि हक्सले के अनुसार– ''सभी लोग अपने जीवन दर्शन के अनुरूप जीवन बिताते हैं। यह बात चिंतन शून्य लोगों के लिये भी सही है। तत्व–ज्ञान के बिना जीवन असम्भव है तत्व चिंतन अथवा तत्व–चिंतन–शून्यता के बीच हमारे पास कोई विकल्प नही है, अपितु विकल्प केवल सत् तत्व चिंतन और कुतत्व–चिंतन के बीच में है (ओड, 2011)।

दर्शन हमें बताता है कि किसी विषय की कौन सी आधारभूत मान्यताएं सत्य हैं और कौन सी मिथ्या अथवा भ्रम। संसार में ऐसा कोई महत्वपूर्ण विषय नहीं है जो दर्शन से असंबद्ध हो और जिसे दर्शन की सहायता की आवश्यकता न पड़ती हो। दर्शन की तीनों शाखाओं (तत्व मीमांसा, ज्ञान मीमांसा व आचार मीमांसा) में लोक–परलोक और जीव–जगत के सभी विषयों का समावेश होता है। साहित्य–दर्शन, विज्ञान–दर्शन, धर्म–दर्शन, कला–दर्शन, समाज–दर्शन, इतिहास–दर्शन, न्याय–दर्शन आदि इसी तथ्य के स्पष्ट प्रमाण हैं।

4.3 महात्मा ज्योतिराव फुले के जीवन दर्शन के मूल स्रोत–

महात्मा ज्योतिराव फुले के जीवन काल में कुछ घटनायें घटित हुयी जिन्होंने ज्योतिराव के जीवन में प्रेरणा स्रोत का कार्य किया तथा उन्हें जीवन में संघर्ष करनें के लिये प्रेरित किया। ज्योतिराव की माँ का देहान्त उनके बाल्यकाल में ही हो गया था। माँ की मृत्यु के पश्चात् इनका पालन पोषण सगुणाबाई ने किया वह ज्योतिराव की माँ और गुरू दोनों ही थीं। सगुणाबाई ने मिशनरी जॉन के बच्चो के साथ ज्योतिराव फुले की देखभाल की ज्योतिराव का विकास उन्ही अंग्रेज बच्चो के बीच में हुआ क्योंकि सगुणाबाई ईसाई पादरी जॉन के घर पर सेविका का कार्य करती थी। जॉन मिशनरी के घर पर सभी लोग उच्च शिक्षा प्राप्त थे तथा उनके घर का वातावरण भी समानता, बंधुत्व व मानवतावादी विचारधारा से ओत–प्रोत था। इन सद्गुणों का ज्योतिराव के व्यक्तित्व पर अत्यधिक प्रभाव पड़ा।

ज्योतिराव अपने बाल्यकाल में ही अपने पड़ोस में रहने वाले दो अलग–अलग धर्म के बौद्धिक व्यक्तियों के सम्पर्क में आए जिनमें से एक थे उर्दू–फारसी के जानकार मुंशी गफ़्फार बेग मुंशी तथा दूसरे थे ईसाई धर्मोपदेशक लिजिट साहब। ज्योतिराव इन दोनों व्यक्तियों से अनेक विषयो पर चर्चा व कथा–प्रसंग इत्यादि करते थे जिससे उनमें मानवीय गुणों व तर्कशील बुद्धि का विकास संभव हो पाया।

ज्योतिराव अपने घर पर मुसलमान बालकों के साथ खेलते थे उनके माध्यम से ज्योतिराव को इस्लाम धर्म की मान्यताओं के विषय में जानकारी मिली उन्होने पाया कि हिन्दू धर्म की तुलना में मुस्लिम धर्म में भेदभाव, अस्पृश्यता, ऊँच–नीच की भावना कम

है इन्हीं गुणों के कारण ज्योतिराव का मस्तिष्क हिन्दू धर्म के विरूद्ध व इस्लाम धर्म के पक्ष में हो गया। जिसका परिणाम उनके सामाजिक व धार्मिक चिंतन में देखने को मिलता है। ज्योतिराव ने बाल्यकाल में ही हिन्दू धर्म के विभिन्न ग्रन्थों, भगवान बुद्ध व महावीर के दर्शन का अध्ययन किया इसके साथ ही ज्योतिराव ने पाश्चात्य दार्शनिक व चिंतको जैसे मार्टिन लूथर किंग, प्रो0विल्सन जॉन्स के चरित्र व विचारों का भी गहन अध्ययन किया था। ज्योतिराव के जीवन में सर्वाधिक प्रभाव थॉमस पेन की पुस्तक 'राईट्स ऑफ मैन' का पड़ा। 'राईट्स ऑफ मैन' 'आम इंसान की बाईबल' मानी जाती है (बौद्ध, 2005)। इस पुस्तक से ही ज्योतिराव को मानवता, मानव गरिमा, समानता, स्वतंत्रता आदि जीवन मूल्यो के विषय में ज्ञान प्राप्त हुआ तथा इन्ही मूल्यों को उन्होने अपना जीवन आदर्श बनाया व जीवनपर्यन्त उनके विकास हेतु प्रयासरत रहे।

ज्योतिराव के व्यक्तित्व व कृतित्व को अनेक वातावरणीय व सामाजिक कारकों ने भी प्रभावित किया जिससे ज्योतिराव का ह्रदय परिवर्तन हुआ। जैसे एक ब्राह्मण मित्र की बारात से उन्हें अपमानित करके निकाला जाना, गणपति बप्पा के मंदिर परिसर से ज्योतिाराव को मात्र अपनी शंका सामाधान के लिये महात्मा से प्रश्न पूछनें के कारण अपमानित कर निकाला जाना आदि। इन घटनाओं ने ज्योतिराव का जीवन का एक लक्ष्य निर्धारित कर दिया उन्होने धर्म की निराधार व्यवस्था की सत्यता व अमानवीय व्यवस्था से अपवंचित वर्ग को मुक्ति दिलाने को ही अपने जीवन का लक्ष्य बना लिया।

4.4 महात्मा ज्योतिराव फुले के दार्शनिक विचार–

महात्मा ज्योतिराव फुले की दार्शनिक विचारधारा में मानवतावाद को सर्वाधिक महत्व दिया गया है उनका दर्शन ही मानवतावादी है। समाज में उनके जीवन मूल्य मानव कल्याण, स्वतंत्रता, समानता, बंधुत्व, न्यायपूर्ण व्यवस्था, विकेन्द्रीकृत संरचना, शोषण रहित समाज, वसुधैव कुटुम्बकम आदि दार्शनिक विचारों पर केन्द्रित हैं। इन्ही मूल्यों के आधार पर उन्होने संघर्ष किया। महात्मा ज्योतिराव फुले ने मानव जीवन, समाज व्यवहार, नैतिकता, राजनीति, आर्थिक व्यवस्था, शिक्षा प्रणाली, आत्मा व परमात्मा जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर अपने विचार व्यक्त किये हैं। जिनका निष्पक्ष मूल्यांकन आवश्यक है किसी भी दार्शनिक विचारधारा को समझने के लिये उसकी तत्व मीमांसा, ज्ञान मीमांसा और आचार मीमांसा को समझना आवश्यक होता है अतः ज्योतिराव के दार्शनिक विचारों की विवेचना निम्नलिखित विन्दुओं के द्वारा स्पष्ट की जा रही है–

- **तत्व मीमांसा–**

दर्शन में तत्व मीमांसा का क्षेत्र व्यापक होता है इसमें ईश्वर एवं आत्मा संबंधी व्याख्या के साथ–साथ वास्तविक सौन्दर्य की विवेचना भी की जाती है। ज्योतिराव के दार्शनिक विचारों में मानवता प्रमुख है इसलिये वह धर्म की व्याख्या भी मानवीय दृष्टि से करते हैं।

फुले बुद्ध के समान ही अनित्यवादी हैं। इससे यह स्पष्ट होता है कि फुले ने निर्माता की कल्पना को माना है परन्तु वह इस निर्माता की भगवान के समान पूजा तथा नामस्मरण करने को नहीं कहते हैं। उन्होने ईश्वर को निर्माता न कहकर 'निर्मिक'

कहा है। निर्मिक की संकल्पना का वे वैज्ञानिक दृष्टिकोण से ही प्रयोग करते हैं उनका मानना था कि यदि मानव सत्य का आचरण नहीं करेगा तो वह दुःखी रहेगा अतः वह निर्मिक का डर दिखाकर सत्य आचरण पर बल देते हैं परन्तु वे आत्मा, स्वर्ग, नर्क, वेद आदि में विश्वास नहीं करते है (फुले, 1889)।

महात्मा ज्योतिराव फुले बुद्धिवादी थे। वह प्रत्येक आयाम को तर्क व बुद्धि की कसौटी पर कसकर देखते थे और उसी को अंतिम सत्य मानते थे। फुले का इस प्रकार का चिंतन 'बुद्धिप्रमाणवाद' कहलाया। आगलावे ने अपनी पुस्तक में उद्धृत किया कि बडस्कर ने फुले के बुद्धिप्रमाणवाद को स्पष्ट करते हुये कहा है कि ''महात्मा ज्योतिराव फुले ने विपरीत पद्धति को अपनाया है वह दैवीकरण से मानवीकरण की ओर तथा प्रकृतिकरण की ओर जाते हैं। वे बुद्धि को ही प्रमाण मानते हैं और उसी के प्रकाश में वेद और पुराणों का अर्थ बतलाते हैं'' (आगलावे, 2005)।

संसार की रचना के विषय में फुले का मानना है कि इस विश्व का निर्माण अपने आप नहीं हुआ वरन् 'कार्य–कारण भाव' के कारण हुआ है। उन्होनें विज्ञान के निर्माणकर्ता की संकल्पना को स्वीकार किया है। यदि ज्योतिराव की तत्व मीमांसा के आदि तत्वों पर विचार किया जाए तो उन्होने 'बुद्धिवाद' व 'समानता' को ही इस सृष्टि का मूल तत्व माना है अन्य सभी तत्वों व आयामों को वह कल्पना मात्र मानते हैं।

महात्मा ज्योतिराव फुले का मानना है कि लोगों ने अपनी कल्पना से देव तथा पाखंड धर्म आदि बातों का मायाजाल रचा है उन्होने अपनी पुस्तक अखण्डादि काव्य रचना में लिखा है–

कल्पना के भगवान बनाए अनेक। लिखा है पाखंड। हित के लिये।।

किन्नर–गन्धर्व ग्रंथो में आए। अनाड़ी फंसाए। नकल से।।

वेशर्म शूद्रीपन उसका अधिष्ठान। फुसलाते नादान शूद्रादि को।।

ब्राह्मणों ने नित्य ही निर्लज्ज। शूद्रों को किया लाचार। जोती कहे।। (फुले, 1991)।

- **ज्ञान मीमांसा–**

ज्ञान मीमांसा में मानवबुद्धि, ज्ञान के स्वरूप, ज्ञान की सीमा, ज्ञान की प्रमाणिकता, ज्ञान प्राप्ति के साधन, सत्य–असत्य, प्रमाण और भ्रम की व्याख्या की जाती है। ज्योतिराव के अनुसार सत्य व अंतिम ज्ञान वही है जो बुद्धि व तर्क पर आधारित है। उनका मानना है कि इस संसार व समस्त धर्मो का सार 'सत्य' है और वही सुख का आधार है। ज्योतिराव फुले ने अपनी 'सार्वजनिक सत्यधर्म' पुस्तक में सत्य के महत्व पर प्रकाश डालते हुये लिखा है कि–

सत्य सभी का है आदि घर।

सभी धर्मो का है पीहर।।

दुनिया में सुख है सारा।

खास सत्य का है वह छोकरा।।

सत्य सुख का है आधार।

बाकी सारा है अंधकार।। (फुले, 1891)।

महात्मा ज्योतिराव फुले का विश्वास है कि सभी मानवों का धर्म एक ही है वह सार्वजनिक धर्म है 'सत्यधर्म'। अन्य समस्त धर्मशास्त्रों में वर्णित बातें कपोल कल्पना है

स्वर्ग, नर्क आत्मा परमात्मा आदि भ्रम है जिनकी रचना लोगों ने अपने व्यक्तिगत स्वार्थो की पूर्ति हेतु की है। ज्योतिराव फुले ने अपनी पुस्तक 'अखण्डादि काव्य रचना' में स्वर्ग–नर्क जैसी काल्पनिक बातो पर प्रकाश डालते हुये लिखा है कि–

स्वर्ग की शांति कल्पना मन में।

लिखा है ग्रंथ में, तर्कबल से।।

कहॉ है स्वर्ग देखा है किसने।

डरो नही मन में, दिखाओ हमें।। (फुले, 1991)।

- **मूल्य मीमांसा–**

मूल्य मीमांसा के क्षेत्र में मानव जीवन के आदर्श एवं मूल्यों की विवेचना की जाती है। कोई भी आदर्श मूल्यों का रूप तभी धारण करता है जब वह हमारे आचरण से परिलक्षित होता है। मूल्य आचार को निर्देशित एवं नियंत्रित करते हैं और हमारा आचार उन मूल्यों को प्रदर्शित करता है। महात्मा ज्योतिराव फुले की आचार मीमांसा मानव केन्द्रित थी। उनकी दृष्टि में नैतिक मूल्यों का अभिप्राय उन मूल्यों से है जो समाज में स्थित मानव प्राणियों के प्रति हमारे हृदय मे, सम्मान एवं समता, करूणा, मैत्री, सहयोग और सहानुभूति जगाते हुये हमें इस योग्य बनाते है कि हम मानवतावादी समाज की रचना एवं विकास में सहायक बन सकें। ज्योतिराव की मूल्य मिमांसा को निम्न तथ्यों के आधार पर स्पष्ट किया जा सकता है–

1. महात्मा ज्योतिराव फुले मानते हैं कि मानव जन्म से ही स्वतंत्र है और संसार में कोई भी मानव दूसरे मानव को गुलाम नहीं रख सकता। अतः उनका प्रथम जीवन मूल्य है मानव स्वतंत्रता का विचार।
2. महात्मा ज्योतिराव फुले का दूसरा जीवन मूल्य है बन्धुता और न्याय। उनका मानना है कि धर्म व राज्य के आधार पर मानव–मानव में भेद करना अनुचित है तथा सभी को न्याय मिलना चाहिए चाहे वह किसी भी वर्ग, लिंग, समुदाय, जाति या प्रजाति का क्यों न हो।
3. महात्मा ज्योतिराव फुले का तीसरा जीवन मूल्य है सत्य आचरण। अपने इस मूल्य को स्पष्ट करते हुये ज्योतिराव कहते है– जो विश्वकर्ता द्वारा निर्मित सभी प्राणियों के लिये किसी भी प्रकार की अनावश्यक परेशानी नही उत्पन्न करता है उसको सत्य आचरण करने वाला मानना चाहिये।

इस प्रकार स्पष्ट है कि ज्योतिराव के जीवन मूल्य मानवतावादी हैं और मानव का मानव से प्रेम सद्व्यवहार ही उनके अनुसार वास्तविक आचार मीमांसा हैं।

4.5 महात्मा ज्योतिराव फुले के सामाजिक विचार–

सामाजिक विचारों का इतिहास मानव समाज जितना ही प्राचीन है। इसका प्रमुख कारण यह है कि मानव समाज के निर्माण के साथ ही सामाजिक विचारों का भी प्रारम्भ हुआ। मानव जीवन से सम्बंधित समस्याओं के विषय में प्रत्येक काल में मनुष्य को चिंतन की आवश्यकता पड़ती है और वह चिंतन करके उस समस्या के निदान का प्रयास भी करता है। एस.पी.रूहेला एवं देवेन्द्र ने अपनी पुस्तक शिक्षा के समाजशास्त्रीय

परिपेक्ष्य में उद्धृत किया है कि अमेरिकी समाजशास्त्री प्रोफेसर टालकोट पारसंस के अनुसार– ''प्रत्येक व्यक्ति सामाजिक कार्यकर्ता है क्योंकि वह विभिन्न प्रकार के सामाजिक कार्य करता है। उसके द्वारा समाज के हित–अहित, पक्ष या विपक्ष में या किसी भी भॉति उसके संदर्भ में सोचने का कार्य सामाजिक कार्य कहलाता है (रूहेला एवं देवेन्द्र, 2003)। सामाजिक विचारों का संबंध केवल सामाजिक समस्याओं से नहीं होता, अपितु वह सामाजिक व्यवस्था और संगठन, सामाजिक नियोजन, सामाजिक प्रगति अथवा सामाजिक जीवन के किसी भी पहलू से हो सकता है।

आधुनिक भारत में सामाजिक क्रांति के अग्रनायकों में महात्मा ज्योतिराव फुले का नाम प्रमुखता से लिया जाता है। उनके विचार और कार्य केवल सामाजिक सुधार तक ही सीमित नही थे बल्कि भारतीय समाज की दृष्टि से क्रांतिकारी थे। फुले ने वर्ण तथा जाति व्यवस्था, हिन्दू धर्मग्रंथ, ब्राह्मणशाही, शूद्र–अतिशूद्र, नारी, किसान, शिक्षा जैसे अत्यंत महत्वपूर्ण विषयों के सम्बंध में अपने मौलिक विचार प्रस्तुत किये और प्रत्यक्ष रूप से कार्य भी किया। उनके सामाजिक विचारों की निम्न लिखित विन्दुओं के अन्तर्गत समीक्षा की जा सकती है–

- **वर्ण एवं जाति व्यवस्था–**

भारतीय समाज में वर्ण एवं जाति व्यवस्था का सदैव प्रमुख स्थान रहा है। भारतीय समाज का वर्ण और जाति व्यवस्था पर आधारित स्तरीकरण ज्योतिराव फुले को मान्य न था। क्योंकि वर्ण व जाति के आधार पर निम्न व शूद्रातिशूद्र समाज का शोषण होता रहा परिणामस्वरूप उनका विकास नही हो सका जिसके कारण देश का

विकास भी अवरूद्ध हुआ। वर्ण व जाति व्यवस्था के सम्बंध में ज्योतिराव ने अत्यंत वस्तुनिष्ठ व तर्कपूर्ण विचार प्रस्तुत किये।

ज्योतिराव का मानना है कि वर्ण व्यवस्था का सम्बंध आर्यो से है। आर्य यहाँ के मूल निवासी नहीं है आर्य बाहर (ईरान) से आए उन्होने यहाँ के लोगो को छलकपट से पराजित किया। समाज पर अपना वर्चस्व स्थापित करने एवं अपनी श्रेष्ठता को लोगों के मध्य साबित करने के लिये चातुर्वर्ण्य व्यवस्था का निर्माण किया। जनता में विश्वास स्थापित करने हेतु इस वर्ण व्यवस्था को ईश्वर (ब्रह्म) से जोड़ दिया गया। मनुस्मृति के (1.31) में लिखा है– ''उस विराट पुरूष ने लोगों के कल्याण के लिये अपने मुख से ब्राह्मण, बाहों से क्षत्रिय, जांघ से वैश्य तथा पैरों से शूद्र को जन्म दिया'' (आगलावे, 2005)। यह स्पष्ट किया कि चूँकि ईश्वर मनुष्य से श्रेष्ठ है अतः उसका कार्य निःसंदेह सत्य ही होगा अतः वर्ण व्यवस्था उचित है। इस प्रकार ब्राह्मण जो आर्य थे स्वयं को श्रेष्ठ बताकर यहाँ के मूल निवासियों का शोषण करने लगे तथा उन्हे समस्त मानवीय अधिकारों से वंचित कर दिया। महात्मा ज्योतिराव ने इस सम्बंध में अपना स्पष्ट मत रखते हुये कहा कि चार वर्णों की रचना का यह परम्परागत सिद्धान्त काल्पनिक है और यह वर्ण व्यवस्था ईश्वर द्वारा निर्मित नही है वरन् ब्राह्मणों ने अपनी सत्ता और श्रेष्ठता बनाए रखने के लिये वर्ण व्यवस्था का निर्माण किया। फुले के इस विचार का समर्थन करते हुये सरोज आगलावे ने उद्धृत किया है कि देशमुख ने स्पष्ट किया है कि– ''आर्यो की सत्ता कायम होने के पश्चात् उन्होनें वर्चस्व स्थापित करने हेतु ही वर्ण व्यवस्था का निर्माण किया होगा।'' (आगलावे, 2005) डी.डी. देशमुख ने मोहनजोदड़ो

और हडप्पा जैसे प्राचीन शहरो की खोज होने के पश्चात् वहॉ के उत्खनन के आधार पर अपने खोजपूर्ण विचार प्रस्तुत किये परन्तु फुले ने जब अपने ये विचार प्रस्तुत किये उस समय तक सिन्धु संस्कृति की खोज नहीं हो पाई थी। उन्होने सामाजिक रूढ़िवादिता, परम्परा, धर्म आदि की यथार्थ विवेचना करके अपने विचार प्रस्तुत किये अतः आज उनके विचारों की सत्यता सिद्ध हो रही है ।

जाति व्यवस्था वर्ण व्यवस्था से ही सम्बंधित है, क्योंकि वर्ण व्यवस्था से ही अनेक जातियों का निर्माण हुआ है। शूद्रातिशूद्रों में तो असंख्य जातियॉं हैं लेकिन ब्राह्मण स्वयं संगठित रहे परन्तु बहुसंख्यक शूद्रातिशूद्रों को विभिन्न जातियों व उपजातियों में विभाजित कर उनका सहस्त्रों वर्षो तक शोषण करते रहे। 'गुलाम गिरी ग्रंथ' की प्रस्तावना में फुले ने प्रश्न उठाया है, और स्वयं उसका उत्तर भी दिया है। 'इस बात पर क्या किसी को शक हो सकता है कि आज भट लोगों की तुलना में शूद्रातिशूद्रों की संख्या दस गुना ज्यादा है, फिर भी भट लोगों ने उन्हे कैसे धूल में मिला दिया? इसके उत्तर में फुले कहते है कि जब दस लोगों के भिन्न–भिन्न मत होते है तो सयानें मनुष्य को इन्हें भ्रमित करने में कोई समस्या नही होती। इसी कारण योजनाबद्ध तरीके से ब्राह्मणों ने जाति भेद का बवंडर खड़ा किया और अनेको स्वहितसाधक ग्रंथो की रचना की (फुले, 1873)। जाति निर्माण के सम्बंध में फुले के सिद्धान्त पर डॉ0 भोईटे ने लिखा है कि, ''जातिसंस्था का निर्माण और उसको बनाए रखने में ही उच्चवर्णियों का हित जुड़ा हुआ है, ज्योतिराव फुले ने इसका बहुत मार्मिक चित्रण प्रस्तुत किया है। जाति व्यवस्था की एक महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि वह

भेदभाव पर आधारित है। ज्योतिराव फुले को किसी भी प्रकार की विषमता मान्य नही थी उनका कहना था कि जब पशु–पक्षियों में कोई भेदभाव नही है तो मानव प्राणियों में जातिभेद कैसे हो सकता है? ज्योतिराव फुले ने सार्वजनिक सत्य धर्म पुस्तक में लिखा है–

निर्माता ने बनाया मानव पवित्र।

कम–ज्यादा फर्क, बुद्धि में।।

परम्परा से बुद्धि नही किसी में।

खोज करो पहले पूरी तरह।। (फुले, 1891)।

ज्योतिराव ने शूद्र तथा अतिशूद्र के विषय में विचार व्यक्त करते हुए कहा है कि वह दोनों एक ही है और इस देश के मूल निवासी है। वे हथियारों से लड़ने में बहुत पराक्रमी योद्धा थे। यह बात मोहनजोदड़ो और हडप्पा शहरों के उत्खनन में स्वतः सिद्ध हो जाती है। वह शूद्रों को मूल रूप से क्षत्रिय मानते है उनके इस सिद्धान्त की प्रतिपुष्टि डॉ0 भीमराव अम्बेडकर ने अपनी पुस्तक 'शूद्र कौन थे' में की है।

- **भारत में सामाजिक गुलामी–**

इस देश में राजनीतिक रूप से हम कई बार गुलाम बनें और स्वतंत्र भी हुए। लेकिन इस देश में धर्म के नाम पर युगों से चली आ रही सामाजिक गुलामी कभी नष्ट नहीं हुयी। ज्योतिराव ने गुलामी के विषय में अपनी पुस्तक 'गुलाम गिरी' 1873 में विस्तार से चर्चा की है। उन्होनें स्पष्ट किया है कि भारत के शूद्रातिशूद्रों की जो गुलामी है वह अमेरिका की गुलामी से अधिक अमानुषिक और भयानक है। उनका

विचार था विश्व के सभी मनुष्य समान हैं, उनमें किसी प्रकार का भेद नही है। सभी मनुष्यों को निर्माणकर्ता ने पैदा किया है 'सभी का निर्माता एक ही है।'

इस प्रकार वर्ण, जाति व्यवस्था, शूद्र अतिशूद्र तथा सामाजिक गुलामी के विषय में ज्योतिराव के विचार स्पष्ट हैं उनके अनुसार सभी व्यक्ति समान है अतः उनमें भेद–भाव करना अनुचित है।

- **नारी स्वतंत्रता–**

ज्योतिराव सामाजिक क्रांतिकारी थे उन्होने नारी स्वतंत्रता का विचार अत्यधिक सामर्थ्य के साथ प्रस्तुत किया। ज्योतिराव ने महिला स्वतंत्रता आन्दोलन का सूत्रपात किया। भारतीय समाज में धर्म का सहारा लेकर महिलाओं का अत्यधिक शोषण किया गया।

भारतीय पुरूष प्रधान समाज व्यवस्था में किसी न किसी रूप में स्त्रियों को पुरूषों के अधीन बनानें की पद्धति प्रचलित रही है। मात्र हिन्दू धर्म में ही नही अन्य धर्मो व ग्रन्थों में भी स्त्रियों को हीन दृष्टि से देखा जाता है तथा उनकी स्थिति को नगण्य माना गया है। प्रसिद्ध विद्वान तथा लेखक डॉ0 अल्तेकर ने अपने ग्रंथ 'द पोजीशन ऑफ वूमेन इन हिन्दू सिविलाइजेशन' में कहा है कि ''हिन्दू समाज में सबसे अधिक दासता व शोषण के घटक नारी तथा शूद्र यह दोनों ही थे'' (आगलावे, 2005)।

19 वीं शताब्दी तक नारी की समाज में दशा अत्यंत सोचनीय व मार्मिक हो गयी थी। महिलाओ को बाल–विवाह, सतीप्रथा, विधवा मुण्डन जैसी अनेक से अमानवीय सामाजिक कुरीतियों को सहन करना पड़ रहा था। ज्योतिराव फुले के नारी स्वतंत्रता

के सम्बंध में विचार दया पर आधारित नहीं थे, वह नर–नारी दोनों को समान व स्वतंत्र मानते थे। ज्योतिराव ने अपनी 'सार्वजनिक सत्यधर्म पुस्तक' में लिखा है– 'नर नारी में श्रेष्ठ नारी है' (फुले,1891)।

महात्मा फुले का मानना है कि मानव के सम्पूर्ण विकास के लिए जिन बातों की आवश्यकता होती है वह सभी अधिकार नारी को मिले हैं। पुरूष व नारी के लिये अलग–अलग नियम निर्धारित करना मानवीय स्वतंत्रता के विरूद्ध है। सार्वजनिक सत्यधर्म पुस्तक में फुले ने उल्लेख किया है– कई धूर्त चालाक ऋषियों ने धर्मशास्त्रों को लेकर कई संहिताएं स्मृतियाँ आदि रचकर पुरूषों को सबल आधार प्रदान किया और महिलाओं को कठिनाई में डाला है (फुले, 1891)।

महात्मा ज्योतिराव फुले सती प्रथा के प्रखर विरोधी थे। उनका दृढ़ मत था कि सती प्रथा को किसी भी प्रकार बंद करना है। उनका कहना था कि दुर्गुणी पति के मृत्यु पर एक अबला नारी को विवश कर सती करना कहाँ का न्याय है? विधवा के जीवित रहने पर उसके साथ पशुवत व्यवहार करना उसके केश कटवाना और तुलसी की माला पहनाकर उसकी इच्छाओं का दमन करना किस धर्म की आधारशिला है?

ज्योतिराव ने बाल विवाह का विरोध किया। उनका विचार था कि वयस्क होने पर महिला–पुरूष एक दूसरे को समझ लेते हैं। यदि उनका विवाह बाल्यावस्था में कर दिया जाए तो विवाह खण्डित होने का भय रहता है जिससे प्रायः हानि स्त्री को ही होती है। इस सम्बंध में ज्योतिराव ने अपनी पुस्तक 'किसान का कोड़ा' में लिखा है– किसानों का बचपन में विवाह होने से उनका काफी पतन हुआ है पहली बात तो यह है

कि किसानों में अपरिपक्व वीर्य होने से उनकी औलाद दिन प्रतिदिन वीर्यहीन हो रही है। कई किसान युवक अपनी औरतों को त्याग देते हैं और अनेक विवाह करते हैं। ऐसा करने से परित्यक्ता महिलायें अपने माता–पिता के घर या लावारिस जीवन यापन करने को मजबूर होती हैं। युवको द्वारा कई शादियां करने से महिलाओं को उनके अधिकार नही मिल पाते और वे मानसिक यातना का शिकार होती हैं (फुले, 1883)। बाल विधवाएं घोर अत्याचार से ग्रसित थी, किसी पुरूष के अपराध के कारण यदि वह गर्भवती हो जाती थी तो उन्हे आत्महत्या करनी पड़ती थी या नवजात शिशु की हत्या करनी पड़ती थी। उन्होने नवजात शिशुओं की हत्या रोकने तथा मातृ व शिशु की देखभाल हेतु बाल हत्या प्रतिबंधक गृह की स्थापना की।

विवाह बन्धन स्त्रियों को अनुगामिनी बनाता है। ज्योतिराव फुले ने स्त्रियों को समानता का स्थान दिलानें वाली नई विवाह विधि बनायी थी। वे चाहते थे कि विवाह विधि में पुरूष प्रधान जितनें मंत्र है वे निकाल दिए जाएं, अतः उन्होने नूतनमंगलाष्टक तैयार किये। उन्होने सम्पूर्ण विवाह विधि से ब्राह्मणों का स्थान ही हटा दिया।

नारी मुक्ति व उत्थान हेतु ज्योतिराव ने अपार संघर्ष किया। वह भली–भॉति जानते थे कि पितृ सत्तात्मक व्यवस्था जब तक नष्ट नही होती तब तक स्त्री की दशा में भी सुधार नही होगा। अतः महिलाओं को शिक्षित कर उन्हें मानवीय अधिकारों के प्रति जागरूक करना महात्मा फुले ने अपने जीवन का प्राथमिक लक्ष्य बना लिया था।

- **किसानों के सन्दर्भ में ज्योतिराव फुले के विचार–**

भारत किसानों का देश है परन्तु भारत में किसानों की दशा सर्वथा दयनीय व सोचनीय रही है। दिनभर खेतों में कार्य करनें वाले, अनाज पैदा कर समाज का भरण–पोषण कराने वाले किसान व मजदूर धार्मिक दृष्टि से शूद्र तथा सामाजिक दृष्टि से कनिष्ठ थे इसीलिए सदा उपेक्षित रहे। अंग्रेजो के राज्य में किसानों की स्थिति में कोई विशेष परिवर्तन नही आया। इस संदर्भ में शाह, एम0बी0 कहते है– ''उत्तर भारत में जमींदारी प्रथा पनपी ही अंग्रेजों के कारण 1870 में कपास की दर हद से ज्यादा गिर गयी और पश्चिम महाराष्ट्र के किसानों ने खुला विद्रोह किया। उन्होने साहूकारों और जमीदारों के घरों पर हमले किए हिसाब–किताब की चौपड़ियाँ जला दी। इससे पहले 1860 में चम्पारण में नील की खेती के विषय में जमीदारों के खिलाफ किसानों ने विद्रोह किया। ये कुछ किसान विद्रोह के उदाहरण थे परन्तु अधिकतर किसान अपने प्रति होने वाले शोषण, अन्याय और अत्याचार को चुपचाप सहते रहे।

ज्योतिराव के समय तक किसानों की इस स्थिति पर किसी ने ध्यान नही दिया था। 'किसान का कोड़ा' ग्रन्थ में ज्योतिराव ने उनकी दयनीय अवस्था पर प्रकाश डाला। वह जानते थे किसानों की इस दयनीय अवस्था का कारण उनकी निरक्षरता है। और उनकी झूठी धर्मश्रद्धा है जिसे ब्राह्मणों ने अपने व्यक्तिगत स्वार्थो की पूर्ति करने के लिये थोपा है। इसके अतिरिक्त किसानों पर सरकार व साहूकारों द्वारा विभिन्न अनावश्यक कर व कर्ज लगाये जाते है जो एक चक्रव्यूह की तरह उनके जीवन को घेर कर उसे अंधकारमय बना देते है।

ज्योतिराव ने किसानों की समस्याओं का अध्ययन कर अत्यंत मौलिक एवं समाधान परक सुझाव दिये है। ज्योतिराव का कहना था कि यदि किसानों की स्थिति में सुधार करना है तो उन्हें कृषि की पद्धति में सुधार करना होगा तथा ब्राह्मणों के बनावटी धर्म से मुक्त होना होगा। यह सब संभव तभी होगा जब वह शिक्षित होगे अतः अंग्रेज सरकार को उनकी शिक्षा–दीक्षा पर ध्यान देना चाहिए। ज्योतिराव किसानों में नैतिकता का विकास करना चाहते थे जिससे वे नीतिवान बन सकें। उनका मत था कि किसानों को एक से अधिक विवाह नहीं करने चाहिए और न ही अपने बालकों का बाल विवाह करवाना चाहिए। वह किसानों को शिक्षित कर उन्हें सरकारी नौकरी में स्थान दिलाने के पक्ष में थे जिससे कृषि पर भार कम हो और उनके जीवन स्तर में सुधार हो सके। उनका यह भी मत था कि गूजर, मारवाड़ी आदि व्यापारियों द्वारा किया जा रहा किसानों का शोषण बंद होना चाहिए व इसके लिये अंग्रेज सरकार को मानक तैयार करने चाहिये।

ज्योतिराव फुले ने किसानों की स्थिति में सुधार हेतु अंग्रेज सरकार को अनेक सुझाव दिये जो अत्यंत आधुनिक, वस्तुनिष्ठ व वैज्ञानिक है, जैसे– गाय और बैल किसानों की विशेष सम्पत्ति हैं अतः इन पशुओं का संरक्षण किया जाए व गौमास खाने पर पाबंदी लगायी जाए, तालाब व बॉधों का निर्माण किया जाए, खेती की जॉच करके पानी का पता लगाया जाए, कृषि उत्पादन का संरक्षण हो, उत्तम नस्ल के पशुओं जैसे– गाय, बैल, बकरी, भेड़ आदि का उत्पादन हो, कृषि प्रदर्शनियों का आयोजन

किया जाए तथा गांव के जंगलों को ग्रामवसियों को वापस कर दिया जाए व जंगल विभाग कुछ सरल नियम बनाए जिससे किसान जंगली सम्पदा का लाभ उठा सकें।

ज्योतिराव ने किसानों के स्वास्थ्य में सुधार हेतु अपने विचार प्रस्तुत किये है और कहा है कि समाज में अश्लीलता फैलाने वाले साधनों को बंद करवाया जाए व किसानों को व्यसनों से मुक्त रखनें हेतु सरकार द्वारा कठोर कदम उठाए जाएं।

ज्योतिराव ने अपनी पुस्तक 'किसान का कोड़ा' में लिखा है कि ''हमारी दयालु सरकार को सभी किसानों को यूरोपियन किसानों की तरह ज्ञानी बनाना चाहिए और उन्हे पढना–लिखना सिखाना चाहिए'' (फुले, 1883)।

- **ज्योतिराव फुले के सामाजिक परिवर्तन सम्बंधी विचार–**

ज्योतिराव फुले के विचार सामाजिक परिवर्तन के सम्बंध में अत्यंत व्यापक थे उनकी सामाजिक परिवर्तन की संकल्पना समाजशास्त्रीय है। जोन्स के अनुसार–''सामाजिक परिवर्तन एक ऐसा शब्द है, जो सामाजिक प्रक्रिया, सामाजिक प्रतिमान, अंतःक्रिया अथवा सामाजिक संघटन के किसी भी पहलू के अन्तर अथवा रूपान्तरण का वर्णन करने के उपयोग में लाया जाता है'' (आगलावे, 2005)।

ज्योतिराव फुले द्वारा वर्ण तथा जाति व्यवस्था, शूद्र, अतिशूद्र, नारी, धर्म, शिक्षा आदि विषयों के सन्दर्भ में प्रस्तुत विचारों का अध्ययन करने पर यह पता चलता है कि वे उन सभी विषयों में व्यापक परिवर्तन चाहते थे। उनकी सामाजिक परिवर्तन की दिशा स्पष्ट थी वह अमानवीय विचार व व्यवहार के स्थान पर मानवतावादी विचार व सभी

लोगों का कल्याण करने वाले व्यवहार की प्रतिस्थापना करने के पक्षधर थे। उनके सामाजिक परिवर्तन के स्वरूप को निम्न बिन्दुओं से स्पष्ट किया जा सकता है–

(i) अश्लीलता से मुक्त समाज–

धनंजय कीर ने अपनी पुस्तक में लिखा है कि ज्योतिराव फुले अश्लीलता से मुक्त समाज चाहते थे उक्त संदर्भ में उनका मत था कि– ''हमारी नीतिमान सरकार को जोगिन, पुजारिन, मूली, गुलाहरिन आदि वेश्याओं का धंधा करने वाली औरतों पर कड़ी नजर रखनीं चाहिए। इसी प्रकार मुरडी, कोल्हारिन, कसविन, तमाशगीर, कथावाचक आदि को अश्लील गानें नही गाना चाहिए। अतः उन पर सख्त नजर रखी जाए और ऐसी दुर्गति का प्रचार करने वाले लोगो को बार बार सजा दिलवा के ही अज्ञानी शूद्र किसानों की नीति आचार में सुधार किया जा सकता है'' (सम्पादकीय कीर, धनंजय, 1976)।

(ii) बेमेल विवाह का विरोध–

ज्योतिराव बेमेल विवाह को गलत मानते थे। एल.जी. मेश्राम ने अपनी पुस्तक में बेमेल विवाह के सम्बंध में ज्योतिराव के विचारो का उल्लेख करते हुये लिखा है कि लोगों को बेमेल विवाह नही करने चाहिए, गर्भपात नहीं करवाना चाहिए। वे विधवा पुर्नविवाह का समर्थन करते थे उन्होने कहा कि वेदो में भी पुर्नविवाह को मान्यता मिली है (सम्पादित मेश्राम, 2002)।

(iii) मादक द्रव्यों के सेवन का विरोध–

ज्योतिराव चाहते थे कि समाज में कोई भी व्यक्ति मादक द्रव्यों का सेवन न करे। इस संदर्भ में उन्होने लिखा है कि ''नर–नारी को मादक द्रव्यों का सेवन वैद्य की आज्ञा के बिना नहीं करना चाहिए (मेश्राम, 2002)।

(iv) स्त्री–पुरूष सम्बंध–

ज्योतिराव समाज में स्त्री पुरूष सम्बंध को पवित्र मानते थे उनका विचार था कि पति–पत्नी को एक दूसरे का अनादर नहीं करना चाहिए तथा एक दूसरे पर अटूट विश्वास रखना चाहिए तथा पत्नी को पति की आज्ञाकारिणी होना चाहिए।

(v) कुटीर उद्योगो को प्राथमिकता–

ज्योतिराव चाहते थे कि बड़े–बड़े करखानों के स्थान पर कुटीर उद्योग हो जिससे अधिक लोगों को रोजगार मिले। ज्योतिराव चाहते थे कि अधिक से अधिक वस्तुओं का निर्माण अपने देश में ही हो वे विदेशी आयात के पक्षधर नही थे। उनका विचार था– ''कुटीर उद्योग इस देश के अर्थतंत्र का आधार है किन्तु अंग्रेजों के यहाँ आनें से इंग्लैण्ड की मशीनों का बना हुआ सस्ता सामान यहाँ आने लगा है जिससे हाथ के दस्तकार बेरोजगार हो गए है'' (मेश्राम, 2002)।

(vi) रूढ़िवादिता व अंधविश्वासों का विरोध–

ज्योतिराव समाज में व्याप्त रूढ़िवादिता का विरोध करते थे। 19 वीं शताब्दी में समाज में मान्यता थी कि हमें समुद्र पार नहीं जाना चाहिए। इस सम्बंध में ज्योतिराव

ने अपने विचार प्रस्तुत करते हुये कहा है ये मान्यताएं समाज में भ्रम व्याप्त करने हेतु ब्राह्मणों द्वारा निर्मित की गयी है इनका कुप्रभाव विदेशी व्यापार पर पड़ा है।

तत्कालीन समाज में विभिन्न अंधविश्वास जैसे– जादू–टोना, तंत्र–मंत्र आदि व्याप्त थे। आम जनमानस अस्वस्थ होने पर किसी चिकित्सक या वैद्य के पास न जाकर ओझा व तांत्रिकों के पास रोग के निराकरण हेतु जाते थे क्योकि वह इसका कारण देवताओं का प्रकोप मानते थे जिसका लाभ उठाकर समाज के भ्रष्ट व्यक्ति उनका शोषण करते थे।

ज्योतिराव ने अपने नाटक 'तृतीय रत्न' में ब्राह्मण जोशी द्वारा एक शूद्र स्त्री को उसके गर्भस्थ शिशु के सम्बंध में भ्रमित कर उसे ठगने का प्रयत्न करते हुये दिखाया है जो तात्कालिक समाज की स्पष्ट रूपरेखा प्रस्तुत करता है। एल.जी. मेश्राम ने अपनी पुस्तक में कर्मकाण्ड़ों एवं आडम्बर युक्त व्यवहार करने वाले लोगो पर ज्योतिराव के कटाक्ष का वर्णन करते हुये लिखा है ज्योतिराव फुले ने मृत्योपरान्त किए जानें वाले कर्मकाण्डो का विरोध किया है। इस सम्बंध में उन्होनें कहा है कि मनुष्य के जीवन काल में ही उसकी सेवा सुश्रूषा करनी चाहिए, उसकी मृत्यु के पश्चात ब्राह्मणों को दान देना, भोज कराना व्यर्थ है (मेश्राम, 2002)।

(vii) सद्विवेक व सद्गुण के सम्बंध में ज्योतिराव के विचार–

ज्योतिराव फुले का मानना था कि माता–पिता के हम पर अनन्त उपकार हैं अतः उनका स्थान हमारे जीवन में सर्वोपरि होना चाहिए। वृद्धावस्था में उनकी देखभाल व सेवा करना ही सबसे बड़ा धर्म होता है।

ज्योतिराव के विचार नैतिकता व चरित्र के सम्बंध में स्पष्ट है उन्होने कहा है मनुष्य को असत्य भाषण नहीं करना चाहिए, किसी दुर्बल को कष्ट नहीं देना चाहिए तथा सभी के साथ न्यायोचित व्यवहार करना चाहिए। उन्होने स्वच्छता को मानव जीवन हेतु अत्यंत आवश्यक माना है क्योकि स्वच्छता को अपनाकर ही विभिन्न रोगों से बचा जा सकता है व जीवन स्तर में सुधार लाया जा सकता है।

इस प्रकार ज्योतिराव ने एक नवीन सामाजिक व्यवस्था की संकल्पना समाज के समक्ष प्रस्तुत की। उनको स्वतंत्रता, समानता, न्याय व मावतावादी मूल्यों पर आधारित ऐसी समाज व्यवस्था की आकांक्षा थी, जिसमें राज्य अथवा धर्म आधारित किसी प्रकार का भेदभाव न हो।

4.6 महात्मा ज्योतिराव फुले के राजनैतिक विचार–

भारत की राजनैतिक स्थिति के विषय में ज्योतिराव के विचार अत्यंत स्पष्ट है उन्होनें इतिहास पर प्रकाश डालते हुये लिखा है कि अत्यधिक प्राचीन काल में भारत देश पर विदेशी आक्रमणकारियों ने आक्रमण किया और उन्हीं आक्रमण कर्ताओं ने यहाँ के मूल निवासियों को परास्त कर अपने आपको 'आर्य' अर्थात् 'श्रेष्ठ' कहलावा। उन्होने सर्वप्रथम अपनी सत्ता भारत देश में स्थापित की और अपनी सत्ता और वर्चस्व को कायम रखनें हेतु योजनाबद्व ढंग से कार्य किए (मेश्राम, 2002)।

महात्मा ज्योतिराव फुले ने भारत में आर्यो व मुस्लिम आक्रमणकारियों ने किस प्रकार भारत में अपनी सत्ता स्थापित की इसका स्पष्ट उल्लेख अपनी पुस्तक अछूतों की कैफियत में किया है। उनके अनुसार आर्य यहाँ के मूल निवासियों से सभ्यता व

संस्कृति में अधिक विकसित थे इसी का लाभ उठाकर उन्होने ईश्वर के अस्तित्व, गुणों व चमत्कारों का कल्पनात्मक वर्णन कर लोगो को भ्रमित कर दिया। उन्होने वर्ण व्यवस्था का निर्धारण किया और सभी वर्णो के कर्म निर्धारित कर दिये। आर्यो ने यहाँ के मूल निवासियों को सबसे निम्न वर्ण में रखा व उन्हें दासत्व प्रदान कर सभी मानवीय अधिकारों से वंचित कर दिया और अपने छल–बल के आधार पर सैकड़ो वर्षो तक भारत में शासन किया।

भारत ने इस समयावधि में आर्थिक दृष्टि से अत्यधिक उन्नति की। इसी धन–वैभव को प्राप्त करने हेतु भारत में विदेशी आक्रमण प्रारम्भ हुए। भारत में मुस्लिम सत्ता की स्थापना को अक्षुण्य बनाए रखने हेतु मुस्लिम शासकों ने ब्राह्मणों को अपने शास्त्रों व नियमों के अनुसार आचरण करने की अनुमति दे दी व उन्हें उच्च पदों पर आसीन किया ताकि उन्हें सामाजिक व धार्मिक दृष्टि से सशक्त लोगो का समर्थन प्राप्त होता रहे। अब ऐसी स्थिति में अपवंचित वर्ग का दोहरा शोषण होने लगा एक ओर उच्च वर्ण के लोग तथा दूसरी ओर मुस्लिम शासक। इस प्रकार सामाजिक व आर्थिक परिस्थितियां विषम होती चली गयी (मेश्राम, 2002)।

19 वीं शताब्दी में राजनैतिक घटनाक्रम में बहुत तेजी से बदलाव आए। मुगल बादशाह के अत्याचार से त्रस्त होकर छत्रपति शिवाजी ने ''मराठा सामाज्य की नींव'' डाली थी इसी मराठा साम्राज्य को महाराष्ट्र के चित्त पावन ब्राह्मणों ने मराठों से हस्तगत करके उसके स्थान पर 'पेशवाई' अर्थात् 'ब्राह्मणशासित' साम्राज्य की स्थापना

की थी। पेशवा शासन काल की अनीतियों के कारण महाराष्ट्र में सामान्य वर्ग जिसमें शूद्रातिशूद्र, किसान व महिलाओं की दशा अत्यंत सोचनीय हो गयी। उन्हें विभिन्न प्रकार के अत्याचारों को सहना पड़ रहा था।

पेशवा शासक विलासिता व आपसी मतभेद के कारण अपनी शक्ति खो चुके थे इसका लाभ उठाकर अंग्रेजों ने इन पेशवाओं को पराजित करके 'ब्रिटिश राजसत्ता' स्थापित की। अंग्रेजी शासन की स्थापना के पश्चात् निम्न वर्ग और अपवंचित वर्गो की स्थिति में सुधार प्रारम्भ हुआ क्योंकि पेशवाई शासन की तुलना में अंग्रेजी नीतियाँ उदार व समानतावादी थी। कानून सबके लिये समान था, इसलिए ऊँच–नीच, अमीर–गरीब इत्यादि भेद कुछ कम हुए थे। इस सम्बंध में डॉ0एम0बी0 शाह लिखते हैं कि– ज्योतिराव यह महसूस ही नहीं बल्कि यह विश्वास भी करते थे कि अंग्रेजी राज सभी जुल्मों से निम्न वर्गो को मुक्ति दिलानें वाला राज है (शाह, 1998)। तात्कालीन स्थिति को देखते हुए ज्योतिराव का यह सोचना गलत नही था क्योकि वर्षो बाद इस वर्ग का स्वच्छन्द हवा में सांस लेने का अवसर मिला था। उन्हें अपने अस्तित्व व अधिकारों का पूर्ण ज्ञान भले ही न हुआ हो परन्तु उनकी आहट अवश्य मिल गयी थी। वर्षो से चली आ रही गुलामी का कारण ज्योतिराव की दृष्टि में पुरोहित वर्ग का सर्वत्र फैला हुआ वर्चस्व था। ब्राह्मणों ने अपनी दीर्घसूत्री राजनीति के चलते सोच समझकर जीवन के प्रत्येक क्षेत्र पर अपना वर्चस्व स्थापित कर लिया था। इस अपराजित अधिकार को नवचेतना अंग्रेजी शासन काल में मिली। शिक्षा व न्याय के समान अधिकारों के चलते

समाज में परिवर्तन की किरण का प्रस्फुटन होने लगा था। ज्योतिराव ने इसी कारण शूद्रातिशूद्रो को यह परामर्श दिया था कि किसी भी कीमत पर अंग्रेजों को त्यागो मत। उनके हमारे ऊपर महान उपकार है।

अंग्रेजी शासन के न्याय तंत्र ने व्यक्ति के भाग्य का निर्णय करने वाले धर्म, ग्राम व जाति की पंचायतों के अधिकारों पर रोक लगा दी थी। ब्रिटिश पूर्व भारत में एक ही अपराध हेतु ब्राह्मणों को नाममात्र व गैर ब्राह्मणों हेतु कठोर दण्ड का विधान था। ब्रिटिश शासन व्यवस्था में सभी के लिये समान न्याय की व्यवस्था प्रारम्भ हुयी। ज्योतिराव ने अपनी पुस्तक 'अछूतों की कैफियत' में महार या मातंग जाति के दो लोगों द्वारा ब्रिटिश महारानी के समक्ष शूद्रातिशूद्रों की समस्याओं व उन समस्याओं को दूर करने हेतु अंग्रेजी शासन द्वारा किये जा रहे प्रयासों का वर्णन किया है व ब्रिटिश महारानीं को उनकी उदार व समतावादी नीतियों के कारण धन्यवाद ज्ञापित किया है। ज्योतिराव ने महार व मातंग के माध्यम से कहा है कि समस्त देश में शांति व न्याय व्यवस्था बनाए रखने हेतु आपकी दयालु अंग्रेज सरकार ने विभिन्न उपाय किये है और इसी कारण आज तक आपकी सत्ता सुरक्षित है और आगे भी रहेगी (मेश्राम, 2002)।

'अछूतो की कैफियत' पुस्तक में ब्रिटिश महारानी को शूद्रातिशूद्रों की स्थिति में सुधार व सकारात्मक राजनीतिक व्यवस्था स्थापित करनें हेतु निम्नलिखित सुझाव दिये गये हैं–

1. जनकल्याणकारी योजनाओं का शुभारम्भ किया जाए

2. शिक्षा के प्रसार हेतु कार्य किया जाए शूद्रातिशूद्रों के बालकों को विद्यालयों में बिना शुल्क प्रवेश दिया जाए।
3. प्रवेश के समय सवर्ण बालकों की तुलना में शूद्रातिशूद्रों को लगभग पॉच प्रतिशत की छूट दी जाए।
4. निम्न वर्ग को भी अंग्रेजी राज्य प्रशासन का ज्ञान कराया जाए व राजनीति में उनकी सहभागिता का समर्थन किया जाए।

ज्योतिराव पहले गैर–ब्राह्मण नेता थे। राजनीति में उनके और उनके समाज के लिये स्थान बनने का समय अभी नही आया था परन्तु ज्योतिराव फुले ने शोषित समाज के न्याय तथा अधिकारों के संघर्ष को एक राजनीतिक आंदोलन में परिवर्तित कर दिया। ज्योतिराव के राजनैतिक विचारों के सन्दर्भ में डॉ0 एम0 बी0 शाह लिखते है कि ''ज्योतिराव का विचार था कि जिस अनुपात में सरकार किसानों से कर वसूली करती है उसी अनुपात में उसे किसानों और दलितो की भलाई के लिये कार्य करना चाहिए।''

इसप्रकार स्पष्ट है कि ज्योतिराव फुले प्रजातांत्रिक व्यवस्था के पक्षधर थे। उनका मानना था कि शासन का आधार स्वतंत्रता समानता व बंधुत्व होना चाहिये। सत्ता में सभी लोगो की भागीदारी सुनिश्चित होनी चाहिये इसके अभाव में अपवंचित वर्ग का विकास असंभव है। अपवंचित वर्ग के विकास के बिना राष्ट्र का विकास भी संभव नही है। डॉ0 भीमराव अम्बेडकर ने ज्योतिराव फुले के इस अभियान को आगे बढ़ाया और पूना पैक्ट के द्वारा शोषित आरक्षित वर्ग के लिये निर्वाचन क्षेत्र सुरक्षित

कराये। ज्योतिराव फुले सहकारिता के समर्थक थे सहकारिता से ही तत्कालीन विषम सामाजिक व आर्थिक परिस्थितियों के विकास को गति प्रदान की जा सकती थी आज भी सहकारिता को प्रोत्साहन दिया जा रहा है।